

आसो सुष्ट ११, शनिवार ता. १७-१०-१९६४
श्री तारणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-१९९,
२००, २०८, २०९ २१०, २१५थी २२० प्रवचन-२१

ये श्रावकाचार तारणस्वामी रचित हैं। उसमें पउ क्रियामें सम्यग्दृष्टिको १८ क्रिया होती है, उसका वर्णन किया है। १९९ और २०० श्लोक।

सम्यक्त्वं शुद्ध धर्मस्य, मूल गुणस्य उच्यते।
दानं चत्वारि पात्रं च, सार्धं ज्ञानमयं ध्रुवं॥१९९॥
दर्शनज्ञान चारित्रं, विशेषितं गुण पूजयं।
अनस्तमितं शुद्ध भावस्य, फासू जल जिनागममं॥२००॥

क्या करते हैं? पहले तो शुद्ध आत्मधर्मकी श्रद्धा रचनेवाले ऋषिको अर्थात् सम्यग्दृष्टि ऋषिको 'सम्यक्त्वं शुद्ध धर्मस्य' अपना आत्मा पूर्ण परमात्म शक्ति संपन्न और राग, विकल्प और पुण्य-पापसे भिन्न जैसे आत्माकी अंतर प्रतीति, अनुभव होना वह प्रथम सम्यग्दर्शन है। 'सम्यक्त्वं शुद्ध धर्मस्य, मूल गुणस्य' वह तो निश्चयकी बात कही। पहले भी निश्चयकी कही। ध्यानादिकी कही थी। समझमें आया? ध्यानादिकी किया है वह निश्चय है अंदरमें। ऐसा निश्चय हो तब ऐसा व्यवहार होता है। वह बात करते हैं।

जिसको सम्यग्दर्शन निश्चय नहीं है, उसको ये व्यवहार किया है, वह व्यवहार करनेमें आता नहीं। समझमें आया? ठीक-ठीकसे पावे कि देओ! १८ क्रिया कही है। लेकिन वह १८ क्रिया तो व्यवहार है, विकल्प है। किसको? जिसको निश्चय सम्यग्दर्शन, शुद्ध ज्ञापकमूर्ति जैसा सर्वज्ञ परमात्माने आत्मा कहा, ऐसा अनुभवमें प्रतीत हुई, उसका व्यवहार कैसा है उसकी व्याख्या होती है। समझमें आया? अकेला १८ गुण वह समकितकी किया और १८ गुण पालते हैं इसलिये हमें समकितकी किया हो गઈ, ऐसा नहीं है। समझमें आया? पंडितः!

पहले सम्यग्दर्शन निश्चय अविरत सम्यग्दर्शनमें अपना आत्मा परसे भिन्न और परका कर्ता और परसे भेरेमें होता है, ऐसा कुछ नहीं है अंदर। ऐसी पूर्ण शुद्ध स्वभावकी अंतर अनुभवमें लेकर श्रद्धाका होना उसका नाम शुद्ध सम्यग्दर्शन है। 'शुद्ध धर्मस्य' समकितको ऋषिको, जैसे ऋषिको 'मूल गुणस्य उच्यते' आठ मूलगुण पालना होता है। समझमें आया? पांच उद्दुम्बर इल आते हैं न? पांच उद्दुम्बर इलका त्याग। मटिरा, मांस और मधुका सेवन नहीं। है तो वह विकल्प, शुभराग। लेकिन उस भूमिकामें ऐसा भाव आये बिना रहता

नहीं. आठ मूलगुण पालनेका भाव सम्यग्दृष्टिको होता है. मांस जाये कि मधु जाये.. समझमें आया? कि दाड़ पीये, कि पांच उदुम्बर इव तो अकेले त्रस श्रवकी राशि है, ऐसी भुराक सम्यग्दृष्टिको होती नहीं. समझमें आया?

‘दानं चत्वारि’ चार प्रकारका दान. आहार, औषध, अल्प और ज्ञान. चार प्रकारका दान पात्रोंको देते हैं. समझमें आया? जघन्य पात्र सम्यग्दृष्टि, मध्यम पात्र पंचम गुणस्थान, उत्कृष्ट छद्म मुनि. ऐसा चार प्रकारका दान-आहार, अल्प, औषध आदि ‘पात्रं च’ लेकिन वह सम्यग्दृष्टि पात्र है उसको देता है. थोड़ी सूक्ष्म बात है. समझमें आया? ‘सार्धं ज्ञानमयं ध्रुवं’ लिया है. भाई! उसको साथमें विवेक होता है. बहुत सूक्ष्म बात है, देओ! पहले तो ‘सम्यक्त्वं शुद्ध धर्मस्य’. सम्यग्दृष्टि जिसको दुर्घ है, शुद्धता आत्माका भानमें हुआ है, ऐसे सम्यग्दृष्टिको ‘मूल गुणस्य उच्यते’. उसको आठ मूलगुणका विकल्प व्यवहार आता है. सम्यग्दर्शनका भान नहीं, अनुभव नहीं और मात्र आठ मूलगुणका विकल्प हो, उसको व्यवहार करनेमें आता नहीं. ऽवयं दृष्टं! पहले निश्चय लिया है, बादमें व्यवहार लिया है. देओ! वर्तमानमें गडबड बहुत चलती है. पहले व्यवहार चालिये, व्यवहार करते-करते निश्चय होता है.

मुमुक्षु :- उलटा चलते हैं.

उत्तर :- उलटा चलते हैं? बात सच्यी है.

ईसलिये तारुणस्वामीने पहले निश्चय लिया. यहां तो अपने बीचमें गाथा छोड दी है, लेकिन पहले ध्यानका लिया न? अंदर आत्मा अकेले असांख्य भागमें परिपूर्ण अनंत गुणका पिंड, विकल्प नाम दया, दानके विकल्पसे भिन्न, शरीरसे भिन्न परिपूर्ण स्वभाव, ऐसा अंतरमें परिपूर्ण परमात्मशक्तिका पिंड में हूं, ऐसा अनुभव सम्यग्दर्शनमें आना, उसका नाम अनुभवका वेदन सम्यग्दर्शन करनेमें आता है. सम्यग्दृष्टि अंतर्भुजमें आनंदका ध्यान करते हैं. वह निश्चय लिया. वह निश्चय हो तब ऐसी १८ क्रियाका व्यवहार सम्यग्दृष्टिको होता है. सम्यग्दर्शन नहीं हो, निश्चय नहीं हो अकेला १८ मूलगुणकी क्रिया हो तो उसको व्यवहार भी करनेमें आता नहीं. समझमें आया? अकेले न्याय बदले तो पूरा तत्त्व पलट जाता है. १८ मूलगुण पालते हैं, हम समझिती है. ऐसा नहीं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- हां. निश्चय सम्यग्दर्शन वस्तुका भानपूर्वक. देओ! ईसलिये ‘सम्यक्त्वं शुद्ध धर्मस्य’ पहला शब्द लिया है. १९९. ‘मूल गुणस्य’ उसको आठ प्रकारका मूलगुण (होता है). पांच प्रकारके इवका त्याग, मध, मांस और दाड़का त्याग. ऐसा विकल्प. विकल्प आता है. परचीज अपनेमें घुस नहीं गई कि मैं छोड दूं. समझमें आया? ऐसे विकल्पमें आठ वेनेका भाव निश्चय सम्यग्दृष्टिको ऐसा व्यवहार आता है. समझमें आया? अकेले शब्दमें

न्याय बढवे तो पूरा तत्व पलट जाता है.

‘दानं चत्वारि पात्रं’ निश्चय सम्यञ्छि है, धर्मी है, अपना आत्मा पूर्णानंद पवित्र (है), सर्वज्ञने जैसा आत्मा कला, अन्य अज्ञानीने कला ऐसा नहीं, वीतरागने कला ऐसा अनंत गुणकी राशि ऐसा आत्मा एक परिपूर्ण (है), ऐसा भान हुआ, वह ‘दानं चत्वारि पात्रं’. यार प्रकारका दान देता है. वह विकल्प है, शुभराग है. दान है वह शुभराग है. धर्म नहीं, संवर-निर्हरा नहीं. समझमें आया? ‘पात्रं च’ ऐसा शब्द बादमें लिया है. यार प्रकारका दान, आहार, औषध, अभय और ज्ञानदान. ये यार प्रकारका दान दूसरेको दे. आहारका (देनेका) विकल्प उठता है, लेकिन किसको? पात्रको. पात्र शब्द पडा है न? सम्यञ्छि, सामने पात्र हो, यौथा गुणस्थानवाला हो, पंचम गुणस्थानवाला हो, छठा गुणस्थानवाला हो, वह जघन्य, मध्यम पात्र है, उसको सम्यञ्छि-निश्चय सम्यञ्छि यार प्रकारका आहार देनेका भाव विकल्प, ऐसा व्यवहार ज्ञानीको होता है. समझमें आया?

‘दानं चत्वारि पात्रं च’ क्यों? कि ‘सार्धं ज्ञानमयं ध्रुवं’. है न? उस दानको ‘सार्धं ज्ञानमयं ध्रुवं’. निश्चय ज्ञानमय भावसे विवेक सहित देता है. भान है. सामने मिथ्यादृष्टि है और बाह्य क्रिया ऐसी करता है, दया, दान आदि, उस क्रियावंतको ज्ञानी पात्र नहीं मानते. समझमें आया? सेठ! जिम्मेदारी बहुत है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- ... यहां तो देता है. हो तो ऐसा होता है, उसकी बात है. निश्चय सम्यञ्छर्शन अपनेमें हुआ, उसको व्यवहार ऐसा होता है कि जो व्यवहारमें आठ मूलगुणका पालनका विकल्प है और पात्रको यार प्रकारका आहार देनेका विकल्प-शुभभाव होता है. पात्रको आहार देना वह संवर-निर्हराकी क्रिया नहीं है. समझमें आया? आहार दे सकते हैं, ले सकते हैं ऐसा नहीं. क्योंकि वह तो परचीज जड है. जडका ज्ञाना-आना वह अपने अधिकारकी बात नहीं. लेकिन उस समय सम्यञ्छिको पात्रको देनेका भक्ति सहित ऐसा भाव शुभ आता है. उसको निश्चयपूर्वक व्यवहार कलनेमें आता है. समझमें आया? ‘सार्धं ज्ञानमयं’ ज्ञानके विवेक सहित. कौन पात्र है, कौन अपात्र है, कौन सुपात्र है, उसका भी ज्ञानी सम्यञ्छिको विवेक होना चाहिए. विवेक बिना उसका व्यवहारदान भी सख्या होता नहीं. कलो, प्रेमचंद्रज! समझमें आया? पीछे.

‘दर्शनज्ञान चारित्रं, विशेषितं गुण पूजयं’. सम्यञ्छि जव निश्चय सम्यञ्छर्शनवान... २०० गाथा है. दर्शन, ज्ञान, चारित्रसे विशिष्ट जो कोई पुरुष धर्मात्मा है, अपनेसे अधिक अथवा दर्शन, ज्ञान, चारित्रमें जास विशिष्ट है, ऐसे धर्मात्माकी सम्यञ्छि पूजना करते हैं, सेवा करते हैं. समझमें आया? है शुभराग. लेकिन ऐसा व्यवहार उसको होता है. यदि ऐसा भक्ति आदिका भाव न हो, अभक्ति हो तो दृष्टि सखी रहती नहीं. समझमें

आया? 'दर्शनज्ञान चारित्रं' वह सम्यग्दर्शन, चारित्रमें विवेकित होता है. ऐसा बिना है. नहीं तो ऐसा अर्थ है कि 'दर्शनज्ञान चारित्रं, विशेषितं गुण पूजयं'. जितनी सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रमें विशेषता है, जैसे धर्मात्माका पूजन करते हैं.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- गुण सहित है, वो न. गुण सहित हो अथवा जैसे गुणको पूजनिक मानते हैं. दर्शन, ज्ञान, चारित्र. सम्यक् निश्चय सम्यग्दर्शन, निश्चय सम्यग्ज्ञान, निश्चय चारित्रवंत हो ऐसा गुण सहित हो, उसे पूजनिक मानते हैं. उसकी पूजा, भक्ति करते हैं. सम्यग्दृष्टिका शुभरागका व्यवहार ऐसा आये बिना रहता नहीं. सम्यग्दर्शन बिना यदि ऐसा कोई अकेला करे (तो) मात्र पुण्यबंध होता है. स्वभावका भानपूर्वक ऐसा हो तो अपनी दृष्टि जितनी निर्मल है, उतनी तो शुद्धता अंदर वर्तती है. संवर-निर्जरा होती है. और जितना शुभभाव है, उससे पुण्यबंधका आस्रव होता है. समझमें आया? कितने बोल लुअे? पंद्रह लुअे.

'अनस्तमितं'. रात्रिको आहार नहीं करना. रात्रिके बाद भोजन, आहार आदि नहीं (करना). समझमें आया? यथाशक्ति उसको रात्रिभोजनका त्याग होता है. 'शुद्ध भावस्य'. पाठ ऐसा किया है. समझमें आया? निर्मल भावसे, लक्ष्मसे नहीं. शुद्ध भाव सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी निर्मलताका भान सहित शुद्धभाव(से देता है). जहां-तहां शुद्धभाव.. शुद्धभाव.. शुद्धभाव पहले लेते हैं. इसके बिना तेरा व्यवहार विकल्प वह व्यवहार है नहीं. बहुत कठिन बात. डालचंदणने पहले सुना नहीं हो तो उसको ऐसा लगे कि आला..! ये क्या है? ऐसा तारुणस्वामी कहते हैं. समझमें आया? वह तो वीतराग मार्ग ऐसा है, ऐसा ही कहते हैं, धरका कुछ नहीं है. समझमें आया?

जिनागममें सर्वज्ञ परमात्मा संतोने जो बात अनादिसे चली आयी है, निश्चय सहित व्यवहार, ये निश्चय सहित व्यवहार सम्यग्दृष्टिका कैसा है, उसका वर्णन है. निश्चय सम्यग्दर्शन नहीं है और अकेले व्यवहार आचारकी किया करे तो शुभभाव होता है, पुण्यबंध होता है. धर्म-भर्म नहीं. और ऐसा करते, करते, करते कभी सम्यग्दर्शन होता है, ऐसा भी नहीं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- करते-करते राग होता है, वह तो रागकी किया है.

मुमुक्षु :- सम्यग्दर्शन नहीं होता?

उत्तर :- उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता, तीन काव तीन लोकमें. वह तो पहलेसे कहते आये हैं. अंतर स्वभाव चिदानंद अकेला भगवान चैतन्यसूर्य पूरानंद समस्वभावी वीतरागभाव अपना, उसका अनुभवमें प्रतीत होकर सम्यग्दर्शन होता है. ये क्रियाकांडसे सम्यग्दर्शन तीन काव तीन लोकमें होता नहीं. समझमें आया? ओहो..! लेकिन जैसे सम्यग्दर्शनकी

भूमिकामें जबतक पूर्ण वीतराग नहीं हो, तो उस गुणस्थानमें ऐसा १८ क्रियाका शुभभाव आये बिना रहता नहीं. समझमें आया? ये सब समझना पड़ेगा. सेठि लोकर आगे बैठे, समझनेकी दरकार करे नहीं. फिर समझे बिना क्या लाभ होगा? बराबर है सेठ?

रत्नत्रयधारी मलात्माओंकी पूजा करना. देओ! सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र. सम्यग्दृष्टि श्रवण हो, सम्यग्ज्ञानी हो उसकी सेवा और सम्यक्चारित्रवंत सम्यग्दर्शन, ज्ञान सहित हो उसकी भी पूजा (करना). वह है शुभभाव. है शुभ विकल्प. लेकिन वह भाव सम्यग्दृष्टि निश्चयवंतको ऐसा भाव व्यवहारसे आये बिना रहता नहीं. ऐसा व्यवहारका विवेक बताया है. समझे? मिथ्यादृष्टिका विवेक नहीं करते, ऐसा कहते हैं. उसमें नकार (-नास्ति) हो तो. आगे थोड़ा आयेगा. सब गाथा नहीं ली है, थोड़ी-थोड़ी ली है, सार-सार. नहीं तो मिथ्यादृष्टि है, कुपात्र है, जिसकी श्रद्धा सर्वज्ञ वीतराग जिनागमके अनुसार आत्माके अनुभवकी दृष्टि है नहीं और अकेला क्रियाकांड है, वह तो कुपात्र है. समझमें आया? उसकी बात यहां है नहीं.

'फासू जल' प्रासुक जल. अचेत जल. समझमें आया? छना पानी, छतना लिया न. .. छना पानी. क्योंकि ... यहां यौथे गुणस्थानवाला. प्रासुक जलका अर्थ ही छतना क्रिया है कि छना पानी. समझमें आया? गावा लुआ पानी. प्रासुक क्यों लिया है? कि उसमें त्रस न आवे. गलणाको क्या कहते हैं? कपडा. छाननेका कपडा होता है न? उसमें त्रस श्रवण आवे नहीं. त्रसका अभाव बतानेको प्रासुक जल लिया है. नहीं तो पानी तो सचेत है. पानीके अंक बिंदुमें असंख्य श्रवण हैं. चाहे तो सात गलनेसे गले या कूअेमेंसे निकला लुआ पानी हो या चाहे तो उपरसे आया लुआ पानी हो, अंक बिंदुमें असंख्य अकेन्द्रिय श्रवण है. समझमें आया? वह अप्रासुक ही है. उसको जब गर्म करके ले तो ... हो जाये. गर्म करनेकी यहां बात नहीं है.

यहां तो सम्यग्दृष्टि प्रासुक जल (लेते हैं). त्रसको उसमें न आने दे, छना पानी काममें लेता है, ऐसा उसका १७वां बोल कहनेमें आया है. है तो शुभ विकल्प. पानी गलने आदिकी क्रिया अपनी नहीं है. आत्मा कर सकता है, छाननेकी क्रिया जडकी आत्मा नहीं कर सकता. समझमें आया? ओहोहो..! और जिनागम. समता करना. उसमें थोड़ा शीतलप्रसादे अंदर लिजा है न? समताभावके लिये जिनागमका मनन करना. ऐसा लिया है. कौंसमें अंदरमें ले लिया. समताभाव पउ क्रियामेंसे... शांति अकषाय ... थोड़ा भूमिका अनुसार है, ऐसा रचना अथवा कषाय मंद रचना और जिनागमका मनन करना. देओ! जिनागम सर्वज्ञ परमात्माने कहे आगम, उसका मनन करना. अज्ञानीका कला लुआ, अपनी कल्पनासे बनाया लुआ शास्त्रका मनन नहीं. सम्यग्दृष्टिका कोई शास्त्र हो, उसका मनन होता है. अज्ञानीके शास्त्रका मनन होता नहीं. समझमें आया? चारमेंसे कोई भी ले, लेकिन सख्या मानकर अकेले

जिनागमका मनन करता है. दूसरेको बूढा मानकर वांचन, विचार आदि करे वह अलग बात है. समजमें आया? वो, १८ क्रिया निश्चय सहित हुई.

यस्य सम्यक्त्व हीनस्य, उग्र तव व्रत संयमं।

सर्व क्रिया अकार्या च, मूल बिना वृक्षं यथा॥२०८॥

क्या कहते हैं? जो सम्यग्दर्शन रहित है. अपना आत्मा क्या चीज है, उसका अनुभव अंतरमें प्रतीतका भाव है नहीं, उसका कठिन तप करना, उग्र तप. छल-छल मलिनका उपवास करे, जंगलमें रहे, लकड़ीकी भांति शरीर सूख जाये, बिलकूल रस ले नहीं. उग्र तप शब्द पडा है न? उग्र नाम दूध, शक्कर, गुड, पकवान नहीं, अकेला पानी और ममरा.. ममराको क्या कहते हैं? चावलका (अनता है). मुमुरा चावलका अनता है. जैसे सादा जोराक ले और चार-चार, छल-छल मलिन, आठ-आठ मलिनका उपवास करे. उग्र तप करे. व्रत पावे. दया, दान, ब्रह्मचर्य पावे, दया पावे, सत्य बोले और संयम इन्द्रियका दमन, धारणा हो, इत्यादि व्यवहार आचरण अकार्य-व्यर्थ है. है भैया?

‘सम्यक्त्व हीनस्य’. जिनागम सर्वज्ञ परमात्माने कहा, ऐसा आत्माका प्रतीत, सम्यक् अनुभव नहीं, जैसे जवको उग्र तप, उग्र व्रत और उग्र इन्द्रिय दमन.. सब उसके साथ ले लेना. व्रत और इन्द्रिय दमन. इन्द्रियका इतना दमन करे. ‘सर्व क्रिया अकार्या’. सर्व क्रिया उसको आत्माके लाभके लिये थोड़ी ली नहीं है. ‘अकार्या च’. (अज्ञानी कहते हैं), क्रिया करते-करते होता है. यहां तो ‘सर्व क्रिया अकार्या’ कहा. सेही! पंडित लोग इसके सामने खिझाते हैं. हम कहते हैं उसके सामने खिझाते हैं. ये नहीं. ऐसी करते, करते, करते, करते सम्यग्दर्शन (हो जायेगा). हिन्दुस्तानमें यहांकी बात सुननेके जिज्ञासु बहुत हो गये हैं कि, ये क्या कहते हैं? पंडितोंमें जलजली मय गह.

कहते हैं, इत्यादि व्रत पालन, संयम नाम इन्द्रियका दमन इत्यादि सर्व व्यवहार आचरण, पुण्यकी क्रिया ‘अकार्या’ व्यर्थ है. मोक्षमार्गमें नहीं है. उससे कुछ आत्माका संवर-निर्हराका लाभ (ऐसा है नहीं). किंचित् लाभ नहीं है. नक्की करना पड़ेगा, डालचंदण! अभी तक बहुत चलाया है. नक्की करना पड़ेगा कि नहीं?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- मिथ्यादृष्टिकी प्रेरणा दूसरेको कैसे मिले? धूलमें मिले. कोई मिथ्यादृष्टि है उसकी परिणति-क्रियासे परको कैसे (लाभ) मिले? समजमें आया?

यहां तो तारुणस्वामी कहते हैं, ‘मूल बिना वृक्षं यथा’. मूल नास्ति.. कहते हैं न? क्या कहते हैं? कृतो शाभा. वह कहते हैं, देभो! मूलके बिना वृक्ष नहीं हो सकता. जहां सम्यग्दर्शन निर्विकल्प चैतन्य क्या है, अपने आत्माका स्वरूप भगवान, जिनागम कैसा कहते हैं, ऐसी अंतरमें प्रतीत, अनुभव है नहीं, तो वृक्षके बिना शाभा होती नहीं. जैसे सम्यग्दर्शन

बिना वह सर्व क्रिया-शाखा सखी है नहीं. सब बूढ़ है. कितना उग्र तप करे, हां! ये तो भाषा धतनी (है). उग्र तपकी व्याख्या लंबी है. अक उग्र तपमें अनशन, उणोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रसपरित्याग, कायक्लेश, प्रायश्चित, विनय, वैवाच्य, सज्जाय, ध्यान. बार प्रकारमें उसकी व्याख्या लंबी है. लेकिन यहां अपने तो थोडा-थोडा कलना है. समजमें आया?

उग्र तपमें तो अनशन छल-छल मलने (करे). अनशन, उणोदरी. अक कवल ले. दूसरा अक भी कवल नहीं ले. बार-बार मलने सदा करे. वृत्तिसंक्षेप. पानी अक घरसे ले, दो घरसे लेना, बादमें नहीं लेना, असा लेना. धन्द्रियोंका दमन. वृत्ति-वृत्ति संक्षेप करे. और रसपरित्याग. दूध, दही, शक्कर बिलकूल जाये नहीं. सब रस छोड दे. उसका नाम उग्र तपकी व्याख्या है. अनशन, उणोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रसपरित्याग, कायक्लेश. आसन असा लगा दे, छ मलने तक चलायमान नहीं हो. उसमें क्या लुआ? मात्र रागकी मंदता हो तो पुण्यबंध हो जायेगा. धर्म-धर्म किंचित् उसको है नहीं. समजमें आया?

धन्द्रियका दमन, प्रायश्चित. .. सब विकल्प, शुभराग है. धर्म-धर्म नहीं. विनय करे. देव-गुरु-शास्त्रका बहुत विनय, बहुत विनय करे. बहुत विनय करे तो शुभराग है. सम्यग्दर्शन बिना सब व्यर्थ है. समजमें आया? विनय, वैवाच्य. देव-गुरु-शास्त्रकी वैवाच्य करे. राग है, सम्यग्दर्शन बिना तेरी क्रिया सब व्यर्थ है. स्वाध्याय. शास्त्रका स्वाध्याय, शास्त्रका स्वाध्याय. पूरा दिन दस-दस, बारह-बारह घंटे वांचन (करे). तेरी स्वाध्याय क्रिया सब व्यर्थ है. उग्र तपमें धतना शब्द पडा है. ये तो संक्षिप्त शब्द है. लंबा करे तो पार नहीं आवे. थोडा-थोडा सार-सार (लेते हैं). सेठने कल न, थोडा उतारना है, आठ व्याख्यान. समजमें आया? विनय, वैवाच्य, सज्जाय, ध्यान. ध्यान करो. ध्यान किसका? वस्तुका भान बिना तेरा ध्यान वृथा है. कायोत्सर्ग. धतनी उग्र तपकी व्याख्या की.

व्रतमें भी पंच महाव्रत. बडा ज़ोरदार व्रत. और संयममें पांच धन्द्रियका दमन. 'सर्व क्रिया अकार्या च, मूल बिना वृक्षं यथा'. अकार्य, जिसमें अपना कार्य सिद्ध होता नहीं. जैसे वृक्षका मूल नहीं है तो उसकी शाखा आदि होते नहीं. कल, बराबर है? २०९. विभा है, तो विभा है उसकी बात चलती है. २०९.

सम्यक्त्व यस्य मूलस्य, साहा व्रत नंतनंताइ।

अवेवि गुण होंति, सम्यक्त्व हृदयेस्य॥२०९॥

'सम्यक्त्व यस्य मूलस्य'. जिसके सम्यग्दर्शन इपी जड है. मूल यानी जड. जिसके आत्मामें सम्यग्दर्शन इपी जड है. देओ! उसमें ना कली थी न? मूल बिना.. उसको शाखाओं, .. नहीं हो सकती हैं. उसको कभशः शांतिकी ज्वारी होती है. व्रतका विकल्प भी होता है. यथार्थ तप अंदर आत्मामें आनंदकी उग्रता होती है.

'अवेवि गुण होंति' और भी बहुत गुण होते हैं. सम्यग्दर्शन है वहां बहुत गुण

होते हैं. सम्यग्दर्शन बिना ऐसी किया करे तो भी आत्माको कुछ कार्यकारी है नहीं. 'सम्यक्त्व हृदयेस्य'. देओ! हृदय शब्दका अर्थ अंतरंग आत्मामें. पूर्णानंद प्रभु, उसका अनुभवमें प्रतीत दुर्घ-सम्यग्दर्शन, उसको अनंत अनंत अनेक गुण प्राप्त होते हैं. सर्व किया वृथा .. है न सामने? यहां अनंत गुण वृद्धि पाते हैं. सामने-सामने लिया है. सर्व किया अकार्य. यहां सर्व गुणोंकी अनंत-अनंत बढवारी होती है. ऐसा लिया है. सामने-सामने प्रतिपक्ष लिया है. समझमें आया? क्या प्रतिपक्ष लिया? क्या समझे?

सम्यक् आत्माका वीतराग सर्वज्ञ जिनागम और परमात्मा त्रिलोकनाथ परमेश्वर, उन्हींने जो आत्मा कला, उसकी दृष्टिका भान नहीं, उसके बिना तेरी सर्व किया वृथा है. उसके सामने सम्यग्दर्शन है तो सब अनंत गुणकी बढवारी, अनंत गुण उसके सक्षल हो जाते हैं. समझमें आया? 'सम्यक्त्व हृदयेस्य'. २१०.

सम्यक्त्व विना जीव जानै श्रुत बहुभेदं।

अनेय व्रत चरणं, मिथ्या तप वाटिका जालं॥२१०॥

वस्तु स्थिति ऐसी है. जिनागम सर्वज्ञ परमात्माने ऐसा कला कि, सम्यग्दर्शनके बिना जोव आरह अंग, नौ पूर्व तक बहु प्रकारसे शास्त्रको जाने. दूसरा ज्ञान तो नहीं, परंतु शास्त्र आरह अंग और नौ पूर्व पढ ले. मूढ है, मिथ्यादृष्टि है. समझमें आया?

'अनेय व्रत चरणं' अन्य जो कोई बहुत प्रतादि आचरण (करे). बहुत आचरण करे. सब 'मिथ्या तप वाटिका'. मिथ्या तपका निवासरूपी जाल है. जाल है, अंध लोगा, अंधमें पडता है. 'मिथ्या तप वाटिका जालं'. है? २१० दुर्घ. २१५.

सम्यक्त्व यस्य सूयंते, श्रुतज्ञानमं विचक्षणं।

ज्ञानेन ज्ञान उत्पाद्यं, लोकालोकस्य पस्यति॥२१५॥

देओ! जिस आत्माके भीतर सम्यग्दर्शन और विधिकक्षण श्रुतज्ञान. देओ! विचक्षण श्रुतज्ञान यानी यथार्थ श्रुतज्ञान. उसका अर्थ यथार्थ किया. सय्या श्रुतज्ञान, भावश्रुतज्ञान. आत्माके भीतर निश्चय भाव सम्यग्दर्शन और भावश्रुतज्ञान है, 'सूयंते' नाम परिणामन कर रहा है. है न? 'सूयंते'. अंतर आत्मा ज्ञान, दर्शन, वस्तु दर्शन और ज्ञानसे निश्चय यथार्थ परिणामन कर रहा है, तो कहते हैं कि 'ज्ञानेन ज्ञान उत्पाद्यं'. भावश्रुतज्ञानके द्वारा ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है कि जिससे लोकालोक दिखलाई पडता है. क्या कहते हैं? कि भावश्रुतज्ञानसे केवलज्ञान होता है. कोई विकल्पसे, या दया, दान या पंच मलाप्रतसे, अष्टाईस मूलगुणसे केवलज्ञान होता नहीं. समझमें आया?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- नहीं होगा, उससे भी नहीं. यहां ये लिया है. कितने बोल लिये हैं, देओ! 'सम्यक्त्व यस्य सूयंते'. जिसकी अंतर दृष्टि, भगवान सर्वज्ञने कला ऐसा आत्मा, अज्ञानी

कल्पित लोगोंने कहा ऐसा नहीं, उसको यथार्थ दृष्टि होती नहीं। भगवानने कहा ऐसा 'सम्यक्त्व यस्य सूयंते' अंतर दर्शनकी प्रतीति हुई है और परिणामन हुआ है, समझमें आया?

'श्रुतज्ञानमं विचक्षणं'. यथार्थ. विचिक्षण नाम ज्ञानकी यथार्थता अंतरमें भावश्रुतकी प्रगट हुई है. सम्यग्दर्शन सहित. सम्यग्दर्शन बिना भावश्रुतज्ञान होता नहीं. और भावश्रुतज्ञान द्वारा.. देओ! तारणस्वामी क्या कहते हैं? 'ज्ञानेन ज्ञान उत्पाद्यं'. भावश्रुत निर्विकल्प ज्ञानसे ही आगे केवलज्ञान प्राप्त करता है. दया, दान, व्रत भीयमें आता है. अष्टाईस मूलगुण आदि व्रतके विकल्पसे कोई केवलज्ञान प्राप्त करता है, ऐसा स्वप्नमें है नहीं. समझमें आया? निश्चय श्रुतज्ञान मोक्षमार्गसे केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है. व्यवहार भीयमें आता है. १८ क्रिया आदिका विकल्प अथवा मुनिके योग्य अष्टाईस मूलगुण, श्रावकके योग्य बारह व्रतका विकल्प, केवलज्ञानकी उत्पत्तिमें वह बिलकूल कारण है नहीं. है उसमें? देओ! क्या है तीसरा पद? देओ!

'ज्ञानेन ज्ञान उत्पाद्यं'. है २१५ (गाथा)? क्या 'ज्ञानेन'? श्रुतज्ञाननं. भावश्रुतज्ञान. अंदर आत्माको स्पर्शकर ज्ञान हुआ, स्वानुभव ज्ञान-स्वसंवेदनज्ञान. अपना अनंत गुणका पिंड प्रभु, उसमें विकल्प नहीं, राग नहीं, कल्पना नहीं. अपना ज्ञानका वेदन छोकर भावश्रुतज्ञान जो हुआ, वह भाव निर्विकल्प शुद्ध शांतिका ज्ञान है. अपना सम्यग्दर्शन सहित. वह 'ज्ञानेन ज्ञान उत्पाद्यं' ईस ज्ञान द्वारा केवलज्ञानकी उत्पत्ति होती है. ज्ञानकी क्रियासे केवलज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसा कहते हैं. भीयमें दया, दानका विकल्प आता है, लेकिन उस क्रियासे केवलज्ञान होता है, ऐसा है नहीं. पुण्यबंध होता है. कही, समझमें आया?

'लोकालोकस्य पस्यति'. कैसा ज्ञान उत्पन्न होता है भावश्रुतज्ञान द्वारा? कि केवलज्ञानमें लोकालोक (देभता है). साथमें लिया है. दूसरेमें लोक और अलोकका दो विभाग, ऐसा है नहीं. लोक जिसमें छह द्रव्य रहते हैं, अलोक जिसमें भावी आकाश है. अपार, अपार, अपार, अपार.. ऐसा लोकालोकका जननेवाला केवलज्ञान अंतरमें सम्यग्दर्शन सहित भावश्रुतज्ञानके अनुभव द्वारा क्रमसे ज्ञानकी क्रिया बढ़ती-बढ़ती, ज्ञानकी क्रिया द्वारा केवलज्ञान होता है कि जो केवलज्ञान लोकालोकको जनता है. पूरी जैनदर्शनकी शैली है. लोक और अलोक तीन कालमें अन्यमें है नहीं. समझमें आया? अब, २१६.

सम्यक्त्वं यस्य न साध्यते, असाध्य व्रत संयमं।

ते नरा मिथ्या भावेन, जीवतोपि मृताएव।२१६।।

मुर्दा है. अष्ट पाहुडमें कुंदकुंदाचार्यने लिया है. मृतक क्लेवर जैसा है. उसमें लिया है. समझमें आया? क्या कहते हैं? 'सम्यक्त्वं यस्य न साध्यते' जिसमें सम्यग्दर्शनका साधन नहीं हो सकता है. भगवान आत्मा निर्विकल्प स्वभावकी अंतर श्रद्धा, ऐसा निर्विकल्प सम्यग्दर्शनका साधन जिसको नहीं है, 'न साध्यते' साधन नहीं हो सकता है, वह 'असाध्य

व्रत संयमं' उसका संयम और व्रत पालना असाध्य है, असाध्य है. उसमें कोई साध्य है नहीं. साध्य न? सम्यग्दर्शनका साध्यका साधन नहीं है, उसमें तेरा व्रत और क्रियाकांड दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा, नाम स्मरण, ज्ञाप ॐ ॐ करना, ईन्द्रिय दमन सब असाध्य है. अर्थात् वह सख्या पल सकता नहीं. सम्यग्दर्शन बिना सख्या व्रत और संयम हो सकता नहीं. अज्ञानी करता है वह सख्या है नहीं. समझमें आया? व्रत और संयमका परिणाम असाध्य है अर्थात् होता ही नहीं.

'ते नरा मिथ्या भावेन' मिथ्यात्वकी भावना सहित होनेसे. क्योंकि सम्यक्का भान नहीं है. अपने स्वभावको देखा नहीं, प्रतीतमें आया नहीं, भावश्रुतमें वेदा नहीं तो भावना उसकी है नहीं. उसकी भावना तो ये विकल्प करूं, ऐसा करूं, ऐसा करूं, ऐसा करूं (है). जो द्विभूता है उसकी भावना है. मिथ्यात्वकी भावना सहित होनेसे ज्वित होनेपर भी मृतकके समान ही है. जिंदा मुर्दा. चलता मुर्दा है, ऐसा अष्टपालुडमें कुंडकुंदाचार्य (कलते हैं). ओलो..! ज्वनशक्ति अपनी अनंत अनंत गुणका भंडार जिसमें अमाप शक्ति पडी है. परमात्मा ही आत्माके पेटमें पडा है. शक्तिमेंसे परमात्मा होता है. समझमें आया? बहुत जगल आता है. अघ्या परमघ्या आता है न? बहुत जगल आता है. अघ्या-अपना आत्मा ही अंदर परमात्मस्वरूपसे पडा है. परमआत्मा यानी परम स्वरूप. उससे ही पर्यायमें परमात्मा होता है. बहुत ठिकाने आता है. ज्याव है, सब पढा है. बारों पुस्तक पढे हैं. समझमें आया?

'ते नरा मिथ्या भावेन, जीवतोपि मृताएव'. वह मुर्दे जैसा है. मरे लुओ. द्विगंवर साधु हो, अष्टाईस मूलगुण पालता हो, लज्जों राणीका त्याग हो और जंगलमें बसता हो. अक बार भोजन कदाचित् अक-अक महिनेके बाद लेता हो. समझमें आया? पचासन लगा दिया ऐसा. कलते हैं, अंतर भान सम्यग्दर्शनकी चीज क्या और उसका ध्येय क्या, भान नहीं है, साधन है नहीं. 'जीवतोपि मृताएव'. ज्वित मुर्दा है. कडक भाषा है. सेठी! ज्वित होनेपर भी मृतकके समान मर गया है. चैतन्यज्वन तो तेरी दृष्टिमें है नहीं. पुण्य-पाप, अल्पज्ञता, दया, दान, व्रत, भक्तिका विकल्प उठता है, विकल्पजाल, उसको सर्वस्व मानते हैं कि हम बहुत करते हैं, बहुत करते हैं, बहुत करते हैं. करते-करते हमारे बहुत साल बीत गये. किसमें? अज्ञानकी क्रियामें. समझमें आया? है भैया? पंडितज! क्षुल्लकपना कहां गया? सम्यग्दर्शन बिना क्षुल्लकपना कैसा? अल्लकपना कैसा? व्रत-इत कैसा? सब मृतक क्लेवर जैसा है. कहां आया? आहाहा..! बहुत कठिन. व्यवहारकी रुचिवालेको तो धाव लगे ऐसा है. ईसलिये जलबली मय गઈ न. .. छूट गया है. भगवानका मार्ग ऐसा है. वही बात है. समझमें आया? देजो! ... उसका ज्वन अज्वन है. समझमें आया? मृतकके समान है. अब, २२०. २१८ लो. है न?

सम्यक्त्वं सहित नरयम्भि, सम्यक्त्व हीनो न चक्रियं।

सम्यक्त्वं मुक्ति मार्गस्य, हीन सम्यक् निगोदयं॥२१८॥

ओलो..! वो, निगोदका आया. सम्यग्दर्शन सहित नर्कमें रहना अच्छा है. 'सम्यक्त्वं सहित नरयम्भि' है कि नहीं? वह तो आता है, योगसारमें आता है. योगीन्द्रदेव कहते हैं, समकितदृष्टि नर्कमें हो तो भी कर्म भिरते हैं. तेरा नर्क भी अच्छा है. और मिथ्यादृष्टिका नौवीं त्रैवेयकका होना वह भी व्यर्थ है. समझमें आया? सम्यग्दर्शन सहित नर्कमें रहना अच्छा है. 'सम्यक्त्व हीनो न चक्रियं'. सम्यग्दर्शनसे शून्य है, उसकी कोई भी क्रिया यथार्थ नहीं है. 'सम्यक्त्वं मुक्ति मार्गस्य' समकित ही मुक्तिका मार्ग है. वो. मोक्षमार्गमें सम्यग्दर्शन मुख्य है. है न? 'सम्यक्त्वं मुक्ति मार्गस्य' मुक्तिके मार्गमें सम्यग्दर्शन पहले है. सम्यग्दर्शन बिना तेरा ज्ञान भी बूढ़ा, तेरी चारित्रिकिया भी बूढ़ी, व्रत पालना बूढ़ा, ब्रह्मचर्य पालना बूढ़ा, सत्य बोलना बूढ़ा, रसत्याग बूढ़ा. सब बूढ़ ही बूढ़ है. सेठ!

मुमुक्षु :- मूल बिना..

उत्तर :- मूल बिना. वह तो पहले आ गया. मूल बिना शाजा कहांसे आयी? तेरा ठिकाना नहीं, दर्शनशुद्धिका ठिकाना नहीं. सर्व धर्म समान है, सबमें ऐसा है, सबमें ऐसा है, उसमें भी कुछ है न. उपनिषदमें ऐसा कहा है, इलानेमें ऐसा कहा है, ठिकनेमें ऐसा कहा है. सब बूढ़. गृहीत मिथ्यात्व. सम्यग्दर्शन तो नहीं, लेकिन मिथ्यात्वकी तीव्रता और फिर प्रतापि क्रिया सब निगोदमें जानेवाली है. समझमें आया? बहुत कठिन, भाई! समाजमें रहना और समाजमें ऐसा कहना (कठिन है).

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- निगोदका पेट बड़ा है. अक सेठ थे. अक भाई थी, भाई. बाल ब्रह्मचारी. व्याख्यान अच्छा देती थी. अभी भी है, सेठ चल बसे. उसके गांवकी भाई थी. व्याख्यान देती थी. तत्त्वका विरोध करे, बिलकूल विरोध. तत्त्वदृष्टि... सेठने कहा, बहन! ध्यान रचना बोलनेमें, हां! नहीं तो निगोदका पेट बड़ा है. ऐसा कहा. समझमें आया? भाई ब्रह्मचारी है, बाल ब्रह्मचारी है. ... शास्त्रकी बात करे, बूढ़ी कल्पना. लोगोंका रंजन करे. दो-दो, पांच-पांच हजार लोग आये. ओलोओ..! तत्त्वसे विरुद्ध करे. यहांका विरोध करे. धीरे बहनको कहा, बहन! सेठके गांवकी बडकी थी. इसलिये उसे साधवी नहीं माने. बहन! पुत्री! ध्यान रचना, हां! तत्त्वका विरोध करनेमें. नहीं तो निगोदका पेट बड़ा है. निगोदका पेट बड़ा है, यहां जाना पड़ेगा. ऐसा कहा. समझमें आया? ..भाई! मालूम है न? काठियावाडमें यह बात बनी थी. काठियावाडमें. ... समझमें आया?

कहते हैं कि 'सम्यक्त्वं सहित नरयम्भि'. सम्यग्दृष्टिका नरकका आयु अंध गया हो और जाना पड़े. पहले, हां! सम्यग्दर्शन होनेके बाद नर्क आयुका अंध नहीं पड़ता. क्या कहा?

समजमें आया? स्वानुभव हुआ, भान हुआ बादमें नर्ककी गतिका बंध नहीं पडता. लेकिन पहले नर्क गतिका बंध पड गया हो,.. जैसे श्रेणिक राजा. उसे क्षायिक समकित हुआ. स्त्री, पुत्र, कुटुंब लजरो थे. हो, उसमें क्या? क्षायिक समकित. नर्कका आयु (बंध) पडा है, नर्कमें गये. कहते हैं कि सम्यक्त्व युक्त नर्कमें भी प्रशंसायोग्य है. वहां भी कम-कमसे सिद्धि करते जाते हैं. पहली नर्कमें तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. चौरासी हजार वर्षकी स्थितिमें गये हैं. समजमें आया? चौरासी हजार वर्षकी स्थितिमें पहली नर्कमें गये हैं. आगामी चौबीसीके प्रथम तीर्थकर होंगे. आगामी जगतगुरु त्रिलोकनाथ सौ ईन्द्रके पूजनिक, वहांसे निकलेंगे. छह महीने पहले ईन्द्र उसकी माताके पास आयेंगे. माता! जनेता! आपकी कोंजमें तीन लोकके नाथ जगतगुरु तीर्थकर पधारनेवाले हैं. बडे पुरुष आये तब साइसझाई करते हैं कि नहीं? वैसे छह महीने आयुष्यके बाकी हो, उपरसे ईन्द्र माताके पास आयेंगे. अभी नर्कमें हैं. चौरासी हजार वर्षकी (स्थिति है). क्षायिक सम्यग्दर्शन प्रगट किया है. दूसरा कोई व्रत, नियम कुछ किया नहीं था, है नहीं. तीर्थकर गोत्र शुभराग आया (तो) बंध गया है. ये आगे आयेगा, अक गाथामें है. २२०में है, इसके बाद आयेगा. समजमें आया?

कहते हैं कि सम्यग्दृष्टि श्रेणिक राजा आदि नर्कमें गये, तो भी क्या है? आलाहा..! अपने भान सहित है. और 'सम्यक्त्व हीनो न चक्रियं'. सम्यग्दर्शनसे शून्य है, उसकी कोई भी किया यथार्थ नहीं है. लाज, कोड, अनंत किया करे, आत्माकी सम्यग्दृष्टि बिना वह सब किया व्यर्थ है. 'सम्यक्त्वं मुक्ति मार्गस्य' समकित मुक्तिका मार्ग है. मुख्य चीज यह है. ... विया है न? रत्नकरंड श्रावकाचार. ... है. जेवटियामें मुख्य आदमी बैठता है न? जैसे भोक्षमार्गमें सम्यक्त्ववंत शरणाधार है. उसको सब विवेक हो गया अंदरमें. क्या वस्तु, क्या स्थिति, क्या पर्याय, क्या गुण, क्या विपरीत, क्या अविपरीत. वह शरणाधार है. कहते हैं कि सम्यक्त्व मुक्तिमार्ग शरणाधार.

'हीन सम्यक् निगोदयं' सम्यग्दर्शनसे लिन है. लिनका अर्थ रहित लेना. लिनका अर्थ थोडा है और थोडा नहीं है, ऐसा नहीं लेना. सम्यग्दर्शनमें कम-ज्यादा होता ही नहीं. या मिथ्यादर्शन, या सम्यग्दर्शन (होता है). उसमें मिश्र प्रकृति थोडी अंतर्मुहूर्त हो, उसकी बात नहीं है. सम्यग्दर्शन ..की बात है. कहते हैं, सम्यग्दर्शन रहित निगोदयं. निगोदमें यवा जाता है. कोई शुभभाव हो तो अकाद भव स्वर्गमें चले जाये, लेकिन बादमें तो सम्यग्दर्शन रहित है, अंतरमें भान नहीं है तो वहांसे निकलकर तिर्यच होकर निगोदमें चला जायेगा. फिर अनंत कालमें मनुष्य होना कठिन है. ये श्रावकाचारमें बात करते हैं, सेठ! श्रावकाचार, हां! मुनि तो अभी कहां है. बहुत अवौकि बात है. २१८.

मुमुक्षु :-

उत्तर :- हां, बराबर है. चक्रवर्ती हो और समकित रहित हो तो भी.. उसमें क्या

है? .. किया. बराबर है. शब्द अलग किया है. अर्थमें किया है. अर्थमें-सम्यक्त्व शून्य है उसकी कोई भी किया यथार्थ नहीं है. लेकिन सम्यग्दर्शन रहित चक्रवर्ती हो तो भी लिन है. बराबर है. नर्कमें है, ... सम्यग्दर्शन रहित नर्कमें जाना अच्छा है, सम्यग्दर्शन रहित चक्रवर्तीपना भी बुरा है. चक्रवर्ती क्या, ईन्द्रपद अहंईन्द्र होना बुरा है, वो न. यहां तो चक्रवर्ती साधारण लिया है, हां! अहंईन्द्र हो नौवीं त्रैवेयकका, लेकिन सम्यग्दर्शन रहित अहंईन्द्र भी बुरा है. उसमें सबमें ऐसा वे लेना. अब, ...

सम्यक्त्वं युत पानस्य, ते उत्तम सदा बुद्धै।

हीनो सम्यक्त्व कुलीनस्य, अकुली अपात्र उच्यते॥२११॥

सम्यग्दर्शन रहित जो कोई भी पात्र हो, चाहे हीन भी हो, समझमें आया? 'युत पानस्य' उसको पंडितोंने सदा उत्तम कहा है. 'उत्तम सदा बुद्धै' ऐसा शब्द पडा है न? ज्ञानीओंने सम्यक्त्व रहित खंडाल हो, रत्नकरंड श्रावकाचारमें लिया है,..

मुमुक्षु :- पशु, पक्षी हो तो भी..

उत्तर :- ठीक है, पशु, पक्षी है न समझिती. बाहरमें असंभ्य पडे हैं. असंभ्य समझिती पंचम गुणस्थानवाले, चौथे वाले स्वयंभूरमण समुद्रमें पडे हैं. समझिती. सख्या सम्यग्दर्शि निश्चय सम्यग्दर्शि. स्वयंभूरमण समुद्रमें असंभ्य पशु पडे हैं. मृग, सिंह, बाघ, वरु, हज्जर जोवनका मच्छ सम्यग्दर्शि, भान है अंतरमें.

कहते हैं, सम्यग्दर्शन रहित कोई भी पात्र हो, चाहे हीन भी हो, पशु, पक्षी हो, कृत्ता हो. कृत्तेको समझित होता है कि नहीं? बाघको होता है, सिंहको होता है. देभो! मारकर जाता है. ... रावणका हाथी, त्रिलोकमंडन हाथी है. त्रिलोकमंडन हाथी है. भरतका पूर्वका मित्र था. भरत, राम, लक्ष्मण दर्शन करनेको जाते हैं. भरतको वैराग्य हुआ तो दीक्षा वे ली. उसको वैराग्य हो गया. जतिस्मरणज्ञान हो गया. पूर्वका भान हो गया. पंद्रह-पंद्रह दिनका उपवास है. देभो! ये हाथी. सब लोग ... हैं. सम्यग्दर्शि हाथी है, जतिस्मरण है. त्रिलोकमंडन हाथी. महा जंगली हाथी था. रावणको हाथ आया था. मधुवनमेंसे. फिर रामने जब लिया.. घर लाये. वैराग्य. सम्यग्दर्शन रहित, हां!

कहते हैं कि सम्यग्दर्शन रहित तो पशु भी भवा (है). ओहो..! पंथी भी भवा. और सम्यग्दर्शन रहित अहंईन्द्र पद और चक्रवर्तीपद भी भवा नहीं है. सम्यग्दर्शि हो, शकेन्द्र ईन्द्र होता है वह तो समझिती होता है. अहंईन्द्र मिथ्यादर्शि होता है. पहले देवलोकका ईन्द्र है न, वह तो समझिती होता है. अहंईन्द्र उपर है वह मिथ्यादर्शि भी होता है. समझमें आया?

अपना आत्मा क्या चीज है, उसका अनुभवका भान बिना, कहते हैं कि चक्रवर्ती, अहंईन्द्रपद भी ... है. और भानवाला.. ओहो..! उत्तम सदा. ज्ञानीओंने परमात्माने सर्वज्ञके

ज्ञानमें .. हैं. पशु, पंजी समझिती हो, उसकी प्रशंसा भगवानकी वाणीमें आयी. गणधरके आगममें आया है. और दृष्टि मिथ्या भ्रम है, अज्ञान है उसका बाह्यका त्यागवाला नौवीं त्रैवेयक यवा गया, लिन है, लिन है. कमसे निगोदमें जायेगा. 'हीनो सम्यक्त्व कुलीनस्य'. उत्तम कुलवाला, परंतु सम्यग्दर्शन रहित है, कहां, समझे? 'अकुली अपात्र उच्यते'. नीच कुल, नीच पात्र कहां जाता है. परंतु नीच कुलवालेको नीच पात्र कहां जाता है. किसको? सम्यग्दर्शन रहित उत्तम कुलमें जन्म है, तो भी नीच कुल और नीच पात्र है. समझमें आया? पहलेमें 'पान' आया था न? 'सम्यक्त्वं युत पानस्य'. इसमें 'अकुली अपात्र उच्यते'. सम्यग्दर्शन रहित कोई भी पात्र हो. ... समझमें आया? सम्यग्दर्शन रहित वह पात्र है और सम्यग्दर्शन रहित अकुली अपात्र है. अपात्र है. कितने व्रत पावे, शरीर शुद्ध हो जाये, तो भी उसको अपात्र कहनेमें आता है. अब, २२०.

तीर्थ सम्यक्त्व सार्धं, तीर्थकर नाम सुद्धये।

कर्म क्षिपंति त्रिविध च, मुक्ति पंथ सार्धं ध्रुवां॥२२०॥

जो सम्यग्दर्शन रहित है, 'सार्धं' है न? 'सार्धं'. 'सार्धं'का अर्थ साथ-सहित. जो आत्मा, अंतरमें सर्वज्ञ परमात्माने कहां जैसा, भगवान आत्माका साथ जिसको दर्शन है, तीर्थकर नामकर्मको बांधकर. देओ! सम्यग्दर्शनसे तीर्थकर (प्रकृति) नहीं बांधती. सम्यग्दर्शन तो अबंध परिणाम है. सम्यग्दर्शनसे बांध होता नहीं. लेकिन सम्यग्दर्शनकी भूमिकामें जैसा विकल्प आता है, और तीर्थकर गोत्र बांध जाता है. मिथ्यादृष्टिको तीर्थकर गोत्रका बांधका भाव होता ही नहीं. क्योंकि सम्यग्दर्शन नहीं है. समझमें आया? जिसकी दृष्टि अंतरमें अनुभवसे विपरीत है, उसको तीर्थकर गोत्र बांधनेका विकल्प कभी तीन कालमें होता नहीं. पंडितज! समझमें आया? सम्यग्दृष्टिको दर्शनविशुद्ध आदि षोडशकारण (भावना) आती है न? षोडशकारण है विकल्प, हां! षोडशकारण भावना है तो आस्रव, है तो राग, है तो पुण्य. धर्म नहीं, संवर नहीं, निर्जरा नहीं.

यहां कहते हैं कि जो जोव सम्यग्दर्शन रहित है वही, तीर्थकर नामकर्मको बांधकर तीर्थकरपने जन्म लेता है. तीर्थकरपने जन्म होता है. इतना पुण्यबांध उसको होता है, जैसा कहते हैं. सम्यग्दृष्टिको ही जैसा पुण्य होता है. मिथ्यादृष्टि, जिसकी दृष्टि विपरीत है, उसको जैसा पुण्य कभी तीन कालमें नहीं होता. इतना यहां सिद्ध करना है. समझमें आया? आत्माकी शुद्धि लिये होता है और जन्म कैसा है? देओ! 'तीर्थकर नाम सुद्धये, कर्म क्षिपंति त्रिविध च'. जन्म ही शुद्धिके लिये है. जहां तीर्थकर हुआ, वह केवलज्ञान लेगा, लेगा और लेगा. उस भावमें सम्यग्दर्शन रहित आया, तीर्थकर प्रकृति बांधी तो बांधनेसे केवलज्ञान नहीं लेगा, परंतु वह जन्म जैसा है कि अपनी शुद्धि बढाकर उस भावमें केवलज्ञान लेगा. समझमें आया? तीर्थकर भाव बांधा उस कारणसे नहीं. जिस भावसे तीर्थकर (प्रकृति) बांधी

वह तो राग था. प्रकृति अंधी वह तो जड है. लेकिन जिसको ऐसा भाव सम्यग्दर्शन सहित आया, वह जन्म लेकर अपना शुद्धि बढ़ायेगा और उस भवमें केवलज्ञान पायेगा.

‘मुक्ति पंथ सार्धं ध्रुवं’. उसे यथार्थ मोक्षका मार्ग विद्यमान है. और तीन प्रकारका कर्म क्षय करते हैं. ... नोकर्म, जड कर्म, भावकर्म. नोकर्म शरीर रहित हो जाता है, द्रव्यकर्म कर्म रहित हो जाता है, पुण्य-पापके विकल्प रहित हो जाता है. तीनों कर्मको भपाकर वह उस भवमें पूर्ण शुद्धि प्राप्तकर मोक्ष प्राप्त करता है. ऐसा सम्यग्दर्शनका महात्म्य है. वह महात्म्य यहां कलनेमें आया है.

(श्रोता :- प्रमाणा वचन गुरुदेव!)

